|b09291 55mazzaF (English)

|c09291_000_55mazza.xml (Task 178071)

|v1

रविवार का दोपहर सत्र

|v2

जनरल सम्मेलन

|v3

रविवार का दोपहर सत्र

|v4

3 अक्टूबर 2010

|v5

पाप में फँसने से बचना

|v6

पाप

|v7

पश्चाताप

|v8

जनरल सम्मेलन

|v9

पाप में फँसने से बचना

|v10

एल्डर जाइरो मज्जागर्दी द्वारा

|v11

सत्तर के

|v12

मजबूत बनें रहें और अच्छे चुनाव करें जो कि आपको जीवन के वृक्ष से फल खाने की अनुमति देगा ।

|v13

एक उजली सुंदर सुबह, मैंने अपनी लगभग आठ वर्षीय पोती, विकि को एक झील के पास जो कि वास्तव में हमारे सुंदर शहर के लिए पानी का एक कुण्ड थी, अपने साथ पैदल चलने के लिए आमंत्रित किया ।

|v14

हम खुशी से चले थे, हमारे मार्ग के बगल में पारदर्शी स्वच्छ बहती नदिया की मधुर आवाज को सुनते हुए । मार्ग पर पक्ंति से सुंदर हरे-हरे वृक्ष और खु शबुदार फूल लगे थे । हम चिड़ियों के गाने की आवाज सुन सकते थे ।

|v15

मैंने अपनी नीली आँखोंवाली, खुशमिजाज, और मासूम पोती से पूछा कि वह अपने बपतिस्मे के लिए तैयारी किस प्रकार से कर रही है ।

|v16

उसने एक प्रश्न से उत्तर दियाः ‘‘दादा जी, पाप क्या होता है ?’’

|v17

मैंने चुपचाप प्रेरणा के लिए प्रार्थना की और मुझसे जितना हो सकता था उतना साधारण तरीके से उत्तर देने का प्रयास कियाः ‘‘परमेश्‍वर की आज्ञाओं के प्रति जानबूझकर की गई अवज्ञाकारिता ही पाप है । यह स्वर्गीय पिता को दुखी करता है, और इसके परिणाम कष्टदायक और दुखी करनेवाले होते हैं ।’’

|v18

स्पष्ट रूप से दिलचस्पी दिखाते हुए उसने मुझसे पूछा, ‘‘और यह कैसे हमारे पास आता है ?’’

|v19

पहले तो प्रश्न से शुद्धता का प्रदर्शन हुआ, परन्तु इससे एक चिन्ता भी प्रदर्शित हुई कि पाप में पड़ने से कैसे बचना चाहिए ।

|v20

उसे और भी अच्छी तरह से समझाने के लिए, मैंने अपने आसपास के प्राकृतिक तत्वों का उपयोग उदाहरण के लिए किया था । अपने मार्ग पर चलते हुए, नुकीले तारों से बनी एक बाड़े के बगल में हमने काफी बड़े आकार का एक पथरीला स्तम्भ पाया; फूलों, झाड़ियों, और उसके आसपास छोट-छोटे उग रहे पौधों से भरा यह एक भारी आकार का था । समय के साथ-साथ ये पौधे उस स्तम्भ से भी बड़े हो जाएंगे ।

|v21

मुझे याद आया कि उसी मार्ग पर कुछ दूरी पर, हमें एक दूसरा स्तम्भ मिलेगा जो कि धीरे-धीरे करके अपने आसपास उग रहे वनस्पतियों द्वारा लगभग ढक लिया गया था । मैंने कल्पना की कि स्तम्भ अपनी मजबूती के बावजूद भी यह महसूस नहीं किया होगा, वह इन कमजोर पौधों द्वारा घिर जाएगा और नष्ट हो जाएगा । स्तम्भ ने सोचा होगा, ''कोई बात नहीं । मैं मजबूत और बड़ा हूं, और ये छोटे-छोटे पौधे मेरा नुकसान नहीं कर सकते ।''

|v22

इसलिए जब आसपास पेड़ बड़े होते हैं, स्तम्भ शुरू में ध्यान नहीं देता है; फिर स्तम्भ पेड़ों द्वारा प्रदान की गई छाया से खुश होने लगता है । परन्तु पेड़ बढ़ना जारी रखता है, और वह दो शाखाओं के साथ स्तम्भ को लपेट लेता है जो कि शुरू में कमजोर दिखाई देते हैं परन्तु समय के साथ स्तम्भ को गुंथ लेती हैं और चारों तरफ से ढक देती हैं ।

|v23

अब भी स्तम्भ को समझ नहीं आता कि क्या हो रहा है ।

|v24

शीघ्र ही, अपने मार्ग में चलते, हमने एक साधारण स्तम्भ पाया । उसे जमीन से उखाड़ दिया गया था । मेरी नन्ही पोती ने प्रभावित होकर देखा और मुझसे पूछा, दादाजी, यही क्या पाप का पेड़ है ?''

|v25

फिर मैंने उसे समझाया कि यह केवल एक चिन्ह, या एक उदाहरण था कि पाप किस प्रकार हमें जकड़ लेता है ।

|v26

मुझे नहीं पता कि हमारे बातचीत का असर उसपर क्या हुआ होगा, परन्तु उस ने मुझे पाप के कई मुखौटों को सोचने पर मजबूर किया और कि कैसे यह हमारे जीवन में धीरे से घुस आते है यदि हम उसे आने की अनुमति दें ।

|v27

हमें सर्तक होना चाहिए क्योंकि छोटे चुनावों के परिणाम बड़े हो सकते हैं, वैसे ही जैसे रात में जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठने के परिणाम महान होते हैं । सिद्धान्त और अनुबन्ध 88:124
हमें सीखाता है, ''जल्दी उठना, ताकि आपके शरीर और मन को शक्ति मिल सके ।'' जो जल्दी सोते हैं, शक्ति प्राप्त कर शरीर और मन के साथ विश्राम से उठते हैं, और आज्ञाकारिता के कारण प्रभु से आशीषित होते हैं ।

|v28

जो आपको कम महत्व का दिखाई देता है, जैसे कि रात में देर से सोना, दिन के लिए प्रार्थना न करना, उपवास न करना, या सब्त के नियम को न मानना---ऐसे छोटे-छोटे कार्य न करना---धीरे-धीरे हमारी संवेदनशीलता को खत्म कर देते है, इससे भी बुरे कामों को करने की हमें अनुमति देते हुए ।

|v29

जब मैं एक किशोर था, रात 10
बजे के पहले मेरा घर आना अनिवार्य था । आज, यही वह समय है जब कुछ लोग बाहर मौज-मस्ती करने जाते हैं । तब भी जब हम जानते हैं कि रात को कोई बुरी घटना घट सकती है । अंधेरे के समय में कुछ युवा लोग अनुचित वातावरण वाली जगहों पर जाते हैं, जहां संगीत और गीत उन्हें पवित्र आत्मा की सहभागिता में रहने की अनुमति नहीं देते हैं । फिर, इन परिस्थितियों के तहत, वे आसानी से पाप के शिकार हो जाते हैं ।

|v30

अक्सर, पाप का शिकार होना कुछ चुने हुए मित्रों से आरंभ होता है जिनके आदर्श सुसमाचार के आदर्श के समान नहीं होते हैं; और प्रसिद्ध होने के लिए या उनके बराबर में स्वीकारे जाने के लिए, व्यक्ति फिर सुसमाचार के सिद्धान्तों और नियमों से समझौता कर लेता है, उस मार्ग पर नीचे जाते हुए जो कि उस व्यक्ति पर और उसके प्रियजनों पर केवल पीड़ा और दुख-दर्द ही लाता है ।

|v31

हमें अपने आसपास पाप को न बढ़ने देने में सर्तक होना होगा । पाप के प्रकार हर जगह हैं---यहां तक, कि उदाहरण के लिए ~~तौर पर~~, एक कंप्यूटर और सेल फोन में भी । ये तकनीकियां उपयोगी हैं और हमारे लिए कई फायदे ला सकती हैं । परन्तु उनका अनुचित तरीके से उपयोग---जैसे समय नष्ट करनेवाले खेलों को खेलने में, उन कार्यक्रमों जो आपको शारीरिक आनन्द देते हों, या इससे भी बुरी बातों में शामिल होना जैसे कि अशलीलता--- विनाशकारी है । अशलीलता आचरण को नष्ट कर देती है और इसमें पड़ने वालों को गन्दगी में तेजी से डुबा देती है, जहां से व्यक्ति तभी ही निकल सकता है जब उसे अत्याधिक सहायता मिले ।

|v32

यह भयानक दानव उपयोग करनेवाले और उसके मासूम बच्चों, पति या पत्नी, पिता और माता पर पीड़ा और उत्पीड़न दोनों का कारण बनता है । शारीरिक आनन्द का फल कड़वा और दुखदायी होता है । आज्ञाकारिता और बलिदान का फल मधुर और कभी न खत्म होने वाली खुशी है ।

|v33

जिन आदर्शों का अनुसरण करना है उसके विषय में निर्णय पहले से ही ले लेना चाहिए, तब नहीं जब प्रलोभन आते हैं । निम्नलिखित हमारे मापदण्ड होने चाहिएः

|v34

•

•

|v35

इसे मैं करूँगा क्योंकि यह सही है, यह प्रभु की तरफ से आता है, और यह मेरे लिए खुशी लाएगा ।

|v36

•

•

|v37

इसे मैं नहीं करूँगा क्योंकि यह मुझे सच्चाई से, प्रभु से, और उस अनन्त खुशी से दूर ले जाएगा जिसकी प्रतिज्ञा उसने विश्वासी और आज्ञाकारी से की है ।

|v38

क्योंकि पिता जानता था कि हम गलत चुनाव करेंगे, उसने, अपनी प्रेम की महान योजना में, सारे पश्चातापियों के पाप के प्रति प्रायश्चित के लिए;
उन लोगों के लिए जो सहायता, दिलासा, और क्षमादान;
चाहते हैं, और उनके लिए जो उसका नाम, यीशु मसीह को, अपने ऊपर ग्रहण करने के इच्छुक हैं, उसने संसार को एक उद्धारकर्ता दिया ।

|v39

यदि हम पाप करते हैं, हमें शीघ्र ही सहायता खोजनी चाहिए क्योंकि हम अपने आप पाप के जाल से बच नहीं सकते हैं, बिल्कुल उसी तरह जैसे आमब ाड़ का स्तम्भ अपने आपको नहीं बचा पाया । इस भयानक जकड़न से बाहर आने के लिए किसी को हमारी सहायता करनी होगी ।

|v40

माता-पिता सहायता कर सकते हैं, और हमारी सहायता के लिए धर्माध्यक्ष की नियुक्ति परमेश्वर द्वारा हुई है । यह वही है जिसके पास हमें जाना चाहिए और अपने दिल की बात बतानी चाहिए ।

|v41

सिद्धान्त और अनुबन्ध 58:42–43 समझाता हैः

|v42

''देखो, उसने जिसने अपने पापों का पश्चाताप कर लिया है, उसे क्षमा किया जाएगा, और मैं, प्रभु, उन्हें फिर कभी याद न रखूँगा ।

|v43

''इससे तुम जान सकते हो कि यदि कोई मनुष्य अपने पापों का पश्चाताप करता है---देखो, वह उन्हें स्वीकार करेगा और उन्हें छोड़ देगा ।''

|v44

झील के पास हमारी पैदल यात्रा के कुछ महीनों के पश्चात, मेरी पोती का साक्षात्कार उसके धर्माध्यक्ष द्वारा हुआ---उसके पिता का---बपतिस्मा के लिए । साक्षात्कार के पश्चात मैंने उससे पूछा कि यह कैसा था । उसने उत्तर दिया, लगभग मुझे फटकारते हुए, ''दादा जी, साक्षात्कार गोपनीय है । आपक ो यह पता है ।''

|v45

धर्माध्यक्षों, मैं आशा करता हूं कि आप इस जबाव को गंभीरतापूर्वक लेंगे । मुझे ऐसा लगता है कि मेरी पोती बहुत ही थोड़े समय में ज्यादा समझदार ह
ो गई थी ।

|v46

जिस पेड़ का मैंने वर्णन किया है जो दुख, दर्द, पीड़ा, और बहकावा लाता है, एक अन्य पेड़ इसके विपरीत परिणाम ला सकता है । इसका वर्णन 1 न
फी 8:10–12 में किया गया हैः

|v47

‘‘और ऐसा हुआ कि मैंने एक वृक्ष देखा, जिसके लुभावने फल हर एक को आनन्दित करनेवाले थे ।

|v48

‘‘और ऐसा हुआ कि मैं वहां गया और उस वृक्ष का फल खाया; और मुझे लगा कि वह इतना मीठा है, कि ऐसा मीठा फल पहले मैंने कभी भी नहीं खाया था । हां, मैंने यह भी देखा कि वह फल सफेद था, इतना सफेद कि उतनी सफेदी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी ।

|v49

‘‘और जब मैं उन फलों को खा रहा था तब मेरी आत्मा आनन्द से परिपूर्ण हो उठी ।’’

|v50

प्यारे भाइयों और बहनों, मजबूत रहें और अच्छे चुनाव करें जो कि आपको जीवन के वृक्ष से फल खाने की अनुमति देगा । यदि, किसी कारणवश, आ
पसे भूल हो जाए या मार्ग से भटक जाएं, हमारा हाथ आगे बढ़ा हुआ है और हम आपसे कहते हैं, ‘‘आओ । यहां आशा है । हम आपसे प्रेम करते हैं, और खुश रहने में हम आपकी सहायता करना चाहते हैं ।’’

|v51

स्वर्गीय पिता हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को दे दिया ।

|v52

यीशु मसीह हमसे इतना प्रेम करता है कि हमारे पापों के प्रति प्रायश्चित में उसने अपना जीवन दे दिया!

|v53

स्वच्छ रहने और उस आनन्द को प्राप्त करने के लिए हम क्या देने के इच्छुक हैं ?

|v54

इन्हीं सच्चाइयों के साथ मैं यीशु मसीह के पवित्र नाम में अपनी गवाही देता हूं, आमीन ।

|v55

लियाहोना

|v56

नवंबर 2010